



COMPILED & CIRCULATED BY
TUMPA JANA(ASSISTANT PROFESSOR)
DEPT. OF SANSKRIT
NARAJOLE RAJ COLLEGE

शुकनासोपदेश

कवि परिचिती

‘कादम्बरी’ नामक प्रख्यात गद्य काव्येण रचयिता वाणभट्ट। इनि ‘हर्षचरितम्’ ग्रन्थे रचना करेछेन। शुकनासोपदेश हल कादम्बरी ग्रन्थेण अंशविशेष। कवि वाणभट्टेण परिचय तार रचित ग्रन्थेण थेके पाओया याय। कादम्बरीण भूमिकांशे एवं हर्षचरित ग्रन्थेण प्रथम दुई उच्छ्वासे वाणेण वंश-परम्पराण विस्तृत विवरण पाओया याय। इनि वाणसायन गोत्रेण ब्राह्मण छिलेन। विहारेण प्रीतिकूट नामक स्थाने वसवास करतेन। पितार नाम चित्रभानु एवं माता राज्यदेवी। शैशव अवस्थातेइ तिनि मातृहारा हन। तैइ पिता मातार भूमिका पालन करेन। यथन वाणभट्ट मात्र १४ वरुण वयस तथनइ पिता स्वर्गवासी हन। पितार मृत्युण पर वान वन्कुदेण सङ्गे विभिन्न जायगाय घुणे वेडाते लागलेन। सेइ समस्त जायगाय विभिन्न विभिन्न अभिज्ञता सङ्ग करे स्वदेशे फिरे आसेन। तार उच्छ्वासेण पालित्येण परिचय पेये अन्यान्य विद्वानरा हर्षपरवश हये तदानीन्तन राजा हर्षवर्धनेण निकट मिथ्या नालिष करेन। हर्षवर्धन सत्यता विचार ना करेइ भरा राजसभाय वाणके डेके ‘अयमासीत् भुजङ्गः’ वले अपमान करेन। परे अवश्य वाणभट्टेण प्रथम विद्यावतार परिचय पेये हर्षवर्धन निजेण भूल वृत्ते पारेण एवं ताके तार राजसभाय सभाकवि रूपे नियुक्त करेन। यार दरुण वाणभट्ट हर्षचरित नामक ग्रन्थे हर्षवर्धन के अवलम्बन करे रचना करेन।

वाणभट्टेण काल

- कवि वाणभट्ट राजा हर्षवर्धनेण सभाकवि छिलेन। अतएव तिनि हर्षवर्धनेण समसामयिक। हर्षवर्धनेण राजसकाल ७०७-७४५ ख्रिस्ताब्द।



COMPILED & CIRCULATED BY
TUMPA JANA(ASSISTANT PROFESSOR)
DEPT. OF SANSKRIT
NARAJOLE RAJ COLLEGE

- ভারত ভ্রমণকারী চৈনিক পরিব্রাজক হিউএন সাং একটি শিলালেখের রাজা হর্ষবর্ধন ও কবি বাণভট্টের বর্ণনা করেছেন। এর থেকে প্রমাণিত হয় বাণভট্ট হর্ষবর্ধনের সমসাময়িক ছিলেন।
- বাণভট্ট তার নিজের গ্রন্থে বিভিন্ন কবি ও কীর্তির কথা আলোচনা করেছেন। যেমন, ভাস, কালিদাস, বাসবদত্তা, বৃহৎকথা ইত্যাদি।
- ভোজরাজও বিংশ শতাব্দীর পূর্বার্ধে সরস্বতীকন্ঠাভরণ গ্রন্থে 'যাদৃগ্ সদ্যবিধো বাণঃ পদ্মবন্ধে ন তাদৃশঃ' বলে বাণকে তার পূর্ববর্তী বলে সিদ্ধ করেন।

অতএব এইসব প্রমাণ থেকে সিদ্ধ হয় যে বাণভট্ট সপ্তম শতাব্দীর পূর্বার্ধে আবির্ভূত হন।

বাণভট্টের বিভিন্ন কীর্তি

সংস্কৃত সাহিত্যে বাণভট্ট আপন কীর্তির দ্বারা যেমন যশ বিস্তার করেছেন, তেমনি সম্পূর্ণ বিশ্বসাহিত্যেও তার বিশেষ স্থান রয়েছে। তার রচিত গ্রন্থ গুলি হল-

- হর্ষচরিতম্ (আখ্যায়িকা)
- কাদম্বরী (কথা)
- চন্দ্রীশতকম্ (স্তুতিমূলক কাব্য)
- মুকুটতাড়িতম্ (নাটক)
- পার্বতীপরিণয় (নাটক)

কাদম্বরী গ্রন্থের সামান্য পরিচয়

কবি বাণভট্টের কাদম্বরী সংস্কৃত গদ্যসাহিত্যে অমর কীর্তি। এই গ্রন্থের আশ্রয়ন করে কোন এক কবি বলেছেন “কাদম্বরীরসজ্ঞানামাহারোগপি ন রোচতে” অর্থাৎ কাদম্বরীর সুধারস পাঠককুলকে এমন ভাবে উন্মাদ করত যে তারা আহারের কথা ভুলে যেত। বিভিন্ন দৃষ্টিভঙ্গিতে কাদম্বরী শব্দটির ব্যাখ্যা করা যায় -



COMPILED & CIRCULATED BY
TUMPA JANA(ASSISTANT PROFESSOR)
DEPT. OF SANSKRIT
NARAJOLE RAJ COLLEGE

- कदम्बः शब्देर अर्थ कलहंस धरले 'कदम्ब+अण्' करे कदम्ब एवं कदम्ब+रु+उ प्रत्यये 'कदम्बर' शब्दे स्त्रीलिङ्गे ङीप् करे कदम्बरी शब्द गठित हय । एर अर्थ कदम्बरी काव्येर नायिका कलहंसवत् रवकारिनी मुक्तायुवती गन्धर्वराजकन्या कदम्बरी ।
- अन्यभावे 'कु' शब्देर अर्थ कुंसित वा नील। कुंसितम् अम्बरं यस्य सः- एरुप वहरीहि समासे 'कदम्बरः' हय । 'कदम्बर' शब्देर अर्थ नीलवसनपरिहित कृष्द्राता बलराम। कदम्बर+अण्+ङीप्= कदम्बरी अर्थात् नीलवसन परिहिता सुन्दरी।लङ्गणार द्वारा बलराम पत्नीके बोवाय ।
- कदम्बरी शब्देर आर एक अर्थ सुरा ।कदम्ब पुष्पविशेष थेके कदम्ब+ अण्=कदम्बम् अर्थात् कदम्बपुष्पजात मधु। लङ्गणार द्वारा कदम्बजात मधुर मत्ता बोवाय। एरुप कदम्बेर मत्ता देय ये नारी अर्थे कदम्ब+दा+ड+ङीप् करे कदम्बरी शब्द गठित हय । अतएव चन्द्रापिडके कदम्बरीपानकारीर मत कदम्बरी मत करे तोलाय ग्रन्थेर नाम कदम्बरी हयेछे ।

कदम्बरी ग्रन्थेर दुटि भाग-पूर्वार्ध ओ उतरार्ध।अनेकेर मते केवल पूर्वार्धइ बाणेर रचना। उतरार्ध लिखेछेन बाणभट्टेर पुत्र भूषणभट्ट।कदम्बरीर विषय एभावेइ शुरु हयेछे-राजा शूद्रक एकदिन राजसभाय थाकाकालीन चन्द्राल कन्या थाँटाय एकटि शुकपाथिके नये उपस्थित हय।वैशम्पायन नामक एइ शुकपाथि अद्भुत एवं मेधावी। आर मानुषेर मत तार कथा शने कौतूहलवशत राजा शूद्रक तार वृत्तान्त जानते चाहल। शुक पाथिं बलल ये से विन्ध्यारण्येर एक विशाल शालमली वृक्षेर कोटरे तार जन्म। जन्मेर परेइ मातृहीन हये से यखन वृद्ध पितार स्नेहे पालित हच्छिल, तखन एकदिन व्याधेर तीरे तार पितार मृत्यु हय ।तारपर महर्षि जाबालिंर पुत्र तাকে आश्रमे नये आसे एवं जाबालि बलल दुष्कर्मेर फल भोग करछे एइ शुकपाथिं।जाबालि वर्णित काहिनीं हल -उज्जयिनींर महाप्रतापशाली राजा तारापिड छिलेन।तार महिषी विलासवती।पुत्रलाभेर इच्छाय ब्रतानुष्ठानकाले एकदिन राजा स्वप्न देखलेन ये ,राणींर मुखे चन्द्र प्रवेश करछे एवं मन्त्री शुकनासओ स्वप्ने देखलेन ये



COMPILED & CIRCULATED BY
TUMPA JANA(ASSISTANT PROFESSOR)
DEPT. OF SANSKRIT
NARAJOLE RAJ COLLEGE

তার পত্নী মনোরমার গর্ভে শ্বেতপদ্ম অর্থাৎ পুণ্ডরীক প্রবেশ করছে। তারপর বিলাসবতী ও মনোরমার গর্ভে যথাক্রমে চন্দ্রাপীড় ও বৈশম্পায়ন জন্মগ্রহণ করে। যথাসময়ে দুজনেই বিদ্যাশিক্ষা সমাপ্ত করেন। শুকনাসের উপদেশমত রাজ্যাভিষেকের পর চন্দ্রাপীড় ও বৈশম্পায়ন দিগ্বিজয় যাত্রায় নিৰ্গত হলেন। হিমালয়ের পাদদেশে এক কিন্নর দম্পতির অনুসরণ করে চন্দ্রাপীড় অচ্ছাদ সরোবরের নিকট বীণাবাদনরতা এক সন্যাসীকে দেখেন। যার নাম মহাশ্বেতা। মহাশ্বেতা বলেন পুণ্ডরীকের সাথে তার প্রণয় ছিল। পুণ্ডরীক বিরহের আকুলতায় প্রাণত্যাগ করেন। তখন সেও প্রাণবিসর্জনে উদ্যত হলে চন্দ্রমণ্ডল থেকে আকাশবাণী হয়, যথাসময়ে তাদের মিলন হবে। এরপর মহাশ্বেতার সখী কাদম্বরীর সাথে চন্দ্রাপীড়ের প্রথম সাক্ষাতেই উভয়ের মধ্যে প্রণয় উত্পন্ন হয়। পরে পিতার আদেশে চন্দ্রাপীড় রাজ্যে ফিরে এলেও বৈশম্পায়ন না আসায় তিনি আবার অচ্ছাদ সরোবরে এসে জানতে পারেন যে, বৈশম্পায়ন মহাশ্বেতাকে প্রণয় নিবেদন করতে গিয়ে মহাশ্বেতার অভিশাপে ভস্ম হয়ে শুকপাথিরূপে পুনর্জন্ম লাভ করে। একথা শুনে বন্ধুর বিরহে চন্দ্রাপীড়ও প্রাণত্যাগ করেন। চন্দ্রাপীড়ের বিরহে কাদম্বরীও আত্মবিসর্জনে উদ্যত হলে একইরকম চন্দ্রমণ্ডল থেকে আকাশবাণী হয়, যথাসময়ে তাদের মিলন হবে। জাবালির মুখে এই সব বৃত্তান্ত শুনে শুকপাথিটির পূর্বপ্রেম জাগরিত হয় এবং মহাশ্বেতাকে অন্বেষণ করতে গিয়ে চণ্ডালকন্যার হাতে ধরা পড়ে এবং আপনার কাছে আমায় নিয়ে আসো। চণ্ডালকন্যা তখন বলে যে আমি হচ্ছি পুণ্ডরীকের মা, শুকপাথিটি হচ্ছে পুণ্ডরীক এবং আপনি চন্দ্রাপীড়। একথা শুনে রাজা শূদ্রকের পূর্বস্মৃতি জাগরিত হয়। শূদ্রক ও শুকপাথি আপন শরীর ত্যাগ করে চন্দ্রাপীড় ও বৈশম্পায়ন হয়ে কাদম্বরী ও মহাশ্বেতার সঙ্গে মিলিত হয়। এই ভাবেই গ্রন্থের সমাপ্তি ঘটে।।